b) महाभारत और भगवद्‌गीता

- महाभारत – धर्म और अधर्म के संघर्ष की शिक्षा।
- भगवद्‌गीता – कर्मयोग, निःस्वार्थ कर्म, आत्मसाक्षात्कार।

) बौद्ध और जैन ग्रंथ

- बौद्ध त्रिपिटक: करुणा, अहिंसा, मध्यम मार्ग।
- जैन आगम: पाँच व्रत – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

अन्य ग्रंथ

- अर्थशास्त्र (कौटिल्य) – नैतिक शासन और न्याय।
- कामसूत्र ~~(व्याख्या)~~ (वात्स्यायन) – जीवन के सुखों का संतुलित और नैतिक उपयोग।

भारतीय नैतिकता के प्रमाणिक स्रोत (Authorities/Rishis as Sources of Indian Ethics)

भारतीय नैतिकता केवल शास्त्रों पर आधारित नहीं है, बल्कि उन महान ऋषियों, आचार्यों और संतों की शिक्षाओं पर भी आधारित है जिन्होंने अपने जीवन और आचरण से नैतिक मूल्यों को व्यवहार में उतारा। इन आचार्यों ने भारतीय समाज को धर्म, सत्य, कर्तव्य, अहिंसा, करुणा और मोक्ष के आदर्शों से परिचित कराया।

) महर्षि व्यास (Maharshi Vyasa)

- महाभारत और भगवद्‌गीता के रचयिता।
- धर्म और अधर्म के संघर्ष के माध्यम से नैतिकता की शिक्षा दी।
- उन्होंने बताया कि जीवन में धर्म पालन और कर्तव्य सर्वोपरि है।
- भगवद्‌गीता के माध्यम से कर्मयोग और निःस्वार्थ कर्म का सिद्धांत दिया।

) महर्षि वाल्मीकि (Maharshi Valmiki)

- रामायण के रचयिता।
- भगवान राम के चरित्र के माध्यम से सत्य, धर्म, मर्यादा और आदर्श आचरण की व्याख्या की।
- उनके अनुसार जीवन का लक्ष्य है – कर्तव्य पालन और नैतिक आदर्शों पर अडिग रहना।

3. महर्षि मनु (Maharishi Manu)
- मनुस्मृति के रचयिता।
- समाज में धर्म, आचार, न्याय और कर्तव्य का निर्धारण किया।
- उन्होंने वर्णाश्रम धर्म और सामाजिक नैतिकता का विस्तृत विवेचन किया।
- उनके अनुसार – "धर्म ही मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।"

4. महर्षि याज्ञवल्क्य (Maharshi Yajnavalkya)
- याज्ञवल्क्य स्मृति के लेखक।
- उन्होंने सामाजिक आचार, न्याय और दायित्वों को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया।
- उन्होंने कहा कि व्यक्ति का धर्म वही है जो समाज और आत्मा दोनों के हित में हो।

5. महात्मा बुद्ध (Gautama Buddha)
- बौद्ध धर्म के प्रवर्तक।
- नैतिकता का आधार: अहिंसा, करुणा, सत्य और मध्यम मार्ग।
- उन्होंने अष्टांगिक मार्ग के माध्यम से जीवन के लिए व्यवहारिक नैतिक दिशा दी।
- उनके अनुसार – "सही विचार, सही वाणी और सही कर्म" ही सच्चा धर्म है।

6. भगवान महावीर (Lord Mahavira)
- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर।
- नैतिकता का आधार: पाँच महाव्रत – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।
- उन्होंने सिखाया कि सच्चा धर्म वही है जो किसी भी जीव को कष्ट न दे।

7. आदि शंकराचार्य (Adi Shankaracharya)
- अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रवर्तक।
- उन्होंने आत्मा और ब्रह्म की एकता पर बल दिया।
- नैतिकता का आधार – ज्ञान, वैराग्य और आत्म साक्षात्कार।
- उनके अनुसार – "अज्ञान ही सभी पापों का मूल कारण है।"